

## मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्व पर आधारित समरस जीवन की संकल्पना

जनक जे. शाह

शोधार्थी, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

cacsjanakshah@gmail.com

एवं

सुनील छानवाल

लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद

### शोध सारांश

आधुनिक युग में मानवता व्यापक चुनौतियों का सामना कर रही है - सामाजिक संघर्ष, पर्यावरणीय क्षरण, आर्थिक असंतुलन और व्यक्तिगत अशांति। इन समस्याओं के मूल में मानव के अस्तित्व और उसके उद्देश्य की अस्पष्टता निहित है। इस संदर्भ में, श्री ए. नागराज (1920-2016) द्वारा प्रतिपादित मध्यस्थ दर्शन (जीवन विद्या) एक क्रांतिकारी दार्शनिक प्रणाली के रूप में उभरा है जो "अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है" के मूलभूत सिद्धांत पर आधारित है (नागराज, 2018)। यह दर्शन न केवल प्रचलित भौतिकवाद और आदर्शवाद दोनों का विकल्प प्रस्तुत करता है, बल्कि मानव जीवन के सभी आयामों में समरसता स्थापित करने का व्यावहारिक मार्ग भी प्रदान करता है।

यह शोध पत्र मध्यस्थ दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों, सह-अस्तित्व की अवधारणा, और समरस जीवन के अनुप्रयोगों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही यह अन्य दार्शनिक परंपराओं से इसकी तुलना करके इसकी अद्वितीयता और समकालीन प्रासंगिकता को स्थापित करता है।

**मुख्य शब्द :** मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्व, समरस जीवन, सार्वभौमिक मानवीय लक्ष्य, अखंड समाज" और "सार्वभौम व्यवस्था

### परिचय

मानव सभ्यता के विकास में दर्शन का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। प्राचीन काल से ही दार्शनिकों ने मानव जीवन के मूलभूत प्रश्नों - अस्तित्व की प्रकृति, मानव का उद्देश्य, सुख-दुःख का कारण, और आदर्श जीवन की संकल्पना - के उत्तर खोजने का प्रयास किया है। भारतीय दर्शन में वेदांत, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक और मीमांसा जैसी विविध परंपराएं विकसित हुईं, जबकि पश्चिमी दर्शन में प्लेटो से लेकर आधुनिक अस्तित्ववाद तक अनेक विचारधाराएं फली-फूलीं। हालांकि, बीसवीं सदी में मानवता को दो प्रमुख दार्शनिक धाराओं का सामना करना पड़ा - भौतिकवाद और आध्यात्मिकता/आदर्शवाद। भौतिकवाद ने मानव को केवल भौतिक प्राणी मानते हुए उसकी चेतना और आध्यात्मिक आवश्यकताओं की उपेक्षा की, जबकि आध्यात्मिकता ने अक्सर भौतिक वास्तविकता

को नकारते हुए रहस्यवाद का सहारा लिया (Nagraj, 2015)। इन दोनों ही दृष्टिकोणों की सीमाओं के कारण आधुनिक मानव संघर्ष, अन्याय और अर्थहीनता का शिकार हो गया।

इसी पृष्ठभूमि में श्री ए. नागराज का मध्यस्थ दर्शन एक नवीन विकल्प के रूप में प्रकट हुआ। यह दर्शन "अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन" के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो न तो पूर्णतः भौतिकवादी है और न ही पारंपरिक आध्यात्मिक अर्थों में आदर्शवादी (नागराज, 2025)। इसके बजाय, यह एक संपूर्ण ढांचा प्रदान करता है जो अस्तित्व की वास्तविकता को समझने और उसके अनुसार जीने का मार्ग दिखाता है।

### मध्यस्थ दर्शन: मूलभूत सिद्धांत और दार्शनिक आधार

#### सह-अस्तित्व का सिद्धांत

मध्यस्थ दर्शन का केंद्रीय सिद्धांत "अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है" है। इसका अर्थ यह है कि समस्त अस्तित्व - चाहे वह भौतिक हो या चेतन - एक सर्वव्यापी "व्यापक वस्तु" (शून्य अवकाश) में समाहित है और परस्पर सामंजस्यपूर्ण ढंग से विद्यमान है (ए नागराज 1998)। यह व्यापक सत्ता नित्य, निष्क्रिय और अपरिवर्तनीय है, जो सभी इकाइयों के अस्तित्व को संभव बनाती है लेकिन स्वयं किसी क्रिया की कर्ता नहीं है।

यह दृष्टिकोण पारंपरिक ईश्वर की अवधारणा से भिन्न है। पारंपरिक दर्शनों में ईश्वर को निमित्त कारण, द्रष्टा-कर्ता-भोक्ता माना गया है, जबकि मध्यस्थ दर्शन में परमात्मा को एक क्रिया शून्य, सर्वव्यापी सत्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अस्तित्व को सक्षम और रहस्य मुक्त बनाती है (नागराज, 2015)।

#### प्रकृति की चार अवस्थाएं

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार प्रकृति चार अवस्थाओं में प्रकट होती है:

**पदार्थ अवस्था:** मिट्टी, पानी, हवा, धातु आदि भौतिक तत्व (क्रियाशीलता)

**प्राण अवस्था:** पेड़-पौधे, वनस्पति जगत (भौतिकता + वृद्धि – क्रियाशीलता, स्पंदनशीलता)

**जीव अवस्था:** पशु-पक्षी (भौतिकता + जीवन + संवेदना – क्रियाशीलता, स्पंदनशीलता, जीने की आशा)

**ज्ञान अवस्था:** मानव (भौतिकता + जीवन + संवेदना + समझदारी – क्रियाशीलता, स्पंदनशीलता, जीने की आशा, ज्ञान/सुख संपन्नता)

यह वर्गीकरण दर्शाता है कि प्रकृति में एक क्रमिक विकास क्रम- विकास है और मानव इस विकास की सर्वोच्च अवस्था है, जिसमें समझदारी की विशेष क्षमता है (नागराज, 2025)।

#### आत्मा (जीवन) की नवीन अवधारणा

पारंपरिक दर्शनों में आत्मा को या तो परमात्मा के समान माना गया है या फिर एक पृथक तत्व के रूप में। मध्यस्थ दर्शन में आत्मा को "गठनपूर्ण परमाणु को जीवन और जीवन में मध्यांश आत्मा" के रूप में परिभाषित किया गया

है। यह एक अविनाशी, स्वतंत्र इच्छाशक्ति वाली इकाई जीवन (अमर) है जो शरीर (नश्वर) के साथ सह-अस्तित्व में रहती है (नागराज, 2015)। महत्वपूर्ण बात यह है कि "जागृत जीवन" ही द्रष्टा-कर्ता-भोक्ता है, न कि परमात्मा।

### अध्ययन अध्यवसाय विधि

पारंपरिक दर्शनों में ज्ञान प्राप्ति के लिए अक्सर गुप्त साधना पद्धतियों का सहारा लिया जाता था, जिनके अनुभव को अनिर्वचनीय माना जाता था। मध्यस्थ दर्शन इसके विकल्प के रूप में "अध्ययन अध्यवसाय विधि" प्रस्तुत करता है। यह विधि मानव को अस्तित्व के सत्य को सीधे अनुभव करने और सत्यापित करने में सक्षम बनाती है (मध्यस्थ दर्शन)। इस विधि की विशेषता यह है कि यह सुगम है, मानव के दैनिक जीवन से जुड़ी है, और अनुभव को भाषा में व्यक्त किया जा सकता है।

### समरस जीवन की संकल्पना और मानवीय लक्ष्य

#### चार सार्वभौमिक मानवीय लक्ष्य

मध्यस्थ दर्शन चार सार्वभौमिक मानवीय लक्ष्य प्रस्तावित करता है जो प्रत्येक मानव के लिए स्वाभाविक रूप से स्वीकार्य हैं:

- 1. समाधान (Resolution):** यह "क्यों और कैसे का उत्तर पाना" है। यह बौद्धिक स्पष्टता और भ्रम से मुक्ति की स्थिति है जो मनुष्य को अपने अस्तित्व और उसके उद्देश्य की स्पष्ट समझ प्रदान करती है।
- 2. समृद्धि (Prosperity):** इसे "प्राकृतिक नियम अनुसार परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना" के रूप में परिभाषित किया गया है। यह केवल धन संचय नहीं, बल्कि परिवार-समाज अभाव का अभाव है।
- 3. अभय (Fearlessness):** यह "परस्पर न्याय सुलभता और विश्वास में होना" के माध्यम से प्राप्त होता है। जब समाज में न्याय और विश्वास स्थापित होता है, तो व्यक्ति भयमुक्त होकर जी सकता है।
- 4. सह-अस्तित्व (Coexistence):** यह अंतिम लक्ष्य है जो "चारों अवस्थाओं में संतुलन" और "नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक" जीने को दर्शाता है।

ये चारों लक्ष्य परस्पर जुड़े हुए हैं और एक प्रगतिशील श्रृंखला बनाते हैं। बौद्धिक स्पष्टता (समाधान) के बिना वास्तविक समृद्धि संभव नहीं, समृद्धि के बिना समाज में अभय नहीं आ सकता, और ये सभी मिलकर सह-अस्तित्व की स्थिति को प्रमाणित करते हैं (मध्यस्थ दर्शन)।

### मानव जीवन के चार आयाम

मध्यस्थ दर्शन मानव जीवन को चार मुख्य आयामों में देखता है: कार्य (Work), व्यवहार (Behavior), विचार (Thought), और अनुभूति (Realization)। इन सभी आयामों में "निर्विषमता एवं एकसूत्रता" प्राप्त करना ही परम कल्याण और समरस जीवन की स्थिति है (नागराज, 2015)।

व्यावहारिक अनुप्रयोग और समकालीन प्रासंगिकता

व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर

व्यक्तिगत स्तर पर मध्यस्थ दर्शन "भ्रम मुक्ति ही मोक्ष है" के सिद्धांत पर आधारित है। यह आंतरिक स्पष्टता और निरंतर सुखपूर्वक जीने का मार्ग प्रदान करता है। जब व्यक्ति स्वयं में समाधानित होता है, तो वह परिवार में न्यायपूर्ण संबंध स्थापित करने में सक्षम होता है (जीवन विद्या शिविर, 2024)।

परिवार को समरस समाज की आधारशिला माना गया है। यह वह इकाई है जहां "न्यायपूर्ण संबंध" और "उभय तृप्ति" का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। परिवार में व्यवस्थित होकर जीना समाज में व्यवस्थित जीवन की पूर्व तैयारी है।

सामाजिक और वैश्विक स्तर पर

मध्यस्थ दर्शन समुदाय चेतना और विविधता से मुक्त "अखंड समाज" और "सार्वभौम व्यवस्था" की परिकल्पना करता है। इस व्यवस्था की प्राप्ति "मानवीय शिक्षा-संस्कार" के माध्यम से होती है, जो "चेतना विकास" को सुनिश्चित करती है (Centre for Harmonious Coexistence)।

राज्य और समाज व्यवस्था प्रक्रिया को पांच प्रमुख पहलुओं के माध्यम से परिभाषित किया गया है:

- मानवीय शिक्षा-संस्कार
- न्याय-सुरक्षा
- उत्पादन कार्य
- विनिमय-कोष
- स्वास्थ्य-संयम

यह दर्शन "मानव धर्म एक है, मानव जाति एक है" के सिद्धांत को प्रतिपादित करता है और "वर्ग चेतना" को "मानवीय चेतना" में परिवर्तित करने का लक्ष्य रखता है।

पर्यावरणीय संतुलन

मध्यस्थ दर्शन पर्यावरण के साथ मानव के रिश्ते को "पूरकता" के रूप में देखता है। यह स्पष्ट करता है कि "पर्यावरण के बिना मानव की और मानव के बिना पर्यावरण की संकल्पना नहीं की जा सकती, दोनों एक दूसरे के पूरक और सह अस्तित्व में हैं"। यह दृष्टिकोण प्रकृति को केवल भोग्य सामग्री मानने के बजाय उसके साथ सह-अस्तित्व में जीने पर बल देता है (मध्यस्थ दर्शन)।

अन्य दार्शनिक परंपराओं से तुलना

अद्वैत वेदांत से तुलना

अद्वैत वेदांत में ब्रह्म को एकमात्र सत्य माना जाता है और जगत् को माया (भ्रम) माना जाता है। मध्यस्थ दर्शन भी गैर-द्वैतवादी है, लेकिन यह प्रकृति को भ्रम नहीं मानता। इसमें प्रकृति नियम-नियंत्रण-संतुलन सहित शाश्वत है और व्यापक वस्तु में समाहित सभी इकाइयां वास्तविक हैं। जागृत जीवन ही द्रष्टा-कर्ता-भोक्ता है, न कि ब्रह्म (A. Nagraj, 2025)।

बौद्ध धर्म से तुलना

बौद्ध धर्म अनात्मवाद (कोई स्थायी आत्मा या जीवन की अमरता नहीं है) पर आधारित है और दुःख से मुक्ति को निर्वाण कहता है। मध्यस्थ दर्शन में आत्मा (जीवन) को एक गठनपूर्ण परमाणु माना गया है वही द्रष्टा-कर्ता-भोक्ता है, जो अमर है। भ्रम मुक्ति का लक्ष्य दोनों में है, लेकिन मार्ग भिन्न है - मध्यस्थ दर्शन में अध्ययन अध्यवसाय विधि है (नागराज, 2015) और बौद्ध धर्म अष्टांगिक मार्ग है।

अस्तित्ववाद और मानवतावाद से तुलना

अस्तित्ववाद व्यक्तिगत स्वतंत्रता और अर्थ के निर्माण पर बल देता है। मध्यस्थ दर्शन मानव-केंद्रित चिंतन है लेकिन यह मानता है कि अस्तित्व स्वाभाविक रूप से व्यवस्थित है। मानवीय उद्देश्य मनमाने ढंग से नहीं बनाए जा सकते हैं, बल्कि अस्तित्व की प्राकृतिक व्यवस्था के भीतर खोजे जाते हैं (Philosophy Brief, 2024)।

शिक्षा में मध्यस्थ दर्शन का योगदान

चेतना विकास मूल्य शिक्षा

मध्यस्थ दर्शन "चेतना विकास मूल्य शिक्षा" का प्रस्ताव करता है जो पारंपरिक शिक्षा की कमियों को दूर करती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में न तो आध्यात्मिकता अपने प्रस्तावों को सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत कर सकती है और न ही भौतिकवाद सार्वभौमिक कल्याण का मार्ग प्रदान कर सका है (Educational Philosophy, n.d.)।

मध्यस्थ दर्शन पर आधारित शिक्षा के मुख्य तत्व हैं:

- अस्तित्व और सह-अस्तित्व की समझ
- मानवीय संबंधों और मूल्यों की शिक्षा
- संबंधों में व्यावहारिक जीवन कौशल
- प्रकृति में पर्यावरणीय चेतना
- मानव समाज में न्याय, धर्म और सत्य की स्थापना

### जीवन विद्या शिविर

वर्तमान में मध्यस्थ दर्शन की शिक्षा सात दिवसीय "जीवन विद्या शिविरों" के माध्यम से दी जा रही है। ये शिविर व्यापक संवाद, स्व-अध्ययन और अनुभव सत्यापन पर आधारित हैं (Jeevan Vidya Workshop, 2024)। इन शिविरों का उद्देश्य व्यक्ति को स्वयं की चेतना को समझने और चेतना विकास में सहायता करना है।

### चुनौतियां और भविष्य की संभावनाएं

#### वर्तमान चुनौतियां

मध्यस्थ दर्शन के व्यापक स्वीकार और कार्यान्वयन में कुछ चुनौतियां हैं:

**सिद्धांत से व्यवहार तक का जटिलता:** समाज की विषम स्थिति में ऐसा जीना एक चुनौती है।

**अकादमिक स्वीकृति:** एक नवीन दार्शनिक प्रणाली होने के कारण इसे व्यापक अकादमिक समुदाय से स्वीकृति पाने में समय लगेगा।

**व्यावहारिक कार्यान्वयन:** सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रणालियों में इसके सिद्धांतों को लागू करना जटिल और समय साध्य है।

#### भविष्य की संभावनाएं

मध्यस्थ दर्शन की भविष्य की संभावनाएं उत्साहजनक हैं:

**शैक्षिक एकीकरण:** मुख्यधारा की शिक्षा में जीवन विद्या के सिद्धांतों को शामिल करने के प्रयास जारी हैं।

**अनुसंधान विकास:** मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध और पर्यावरणीय स्थिरता पर इसके प्रभावों का अनुभवजन्य अध्ययन हो सकता है।

**वैश्विक प्रसार:** इसके सार्वभौमिक सिद्धांत विभिन्न संस्कृतियों में लागू हो सकते हैं।

**नीति निर्माण:** शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय और पर्यावरण नीतियों में इसके सिद्धांतों का समावेश संभव है।

### निष्कर्ष

मध्यस्थ दर्शन एक व्यापक और समग्र दार्शनिक प्रणाली है जो मानवता के समक्ष आने वाली समकालीन चुनौतियों का एक व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है। "अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है" का इसका मूलभूत सिद्धांत न केवल वास्तविकता की एक नवीन समझ प्रदान करता है, बल्कि व्यक्तिगत से लेकर वैश्विक स्तर तक समरसता स्थापित करने का मार्ग भी दिखाता है। यह दर्शन की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं कि यह न तो पूर्णतः भौतिकवादी है और न ही पारंपरिक अर्थों में आध्यात्मिक। इसके बजाय, यह एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो भौतिक वास्तविकता

को स्वीकार करते हुए भी मानव चेतना और उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व के चार लक्ष्य एक व्यवस्थित मार्ग प्रस्तुत करते हैं जो व्यक्तिगत कल्याण से शुरू होकर सामाजिक व्यवस्था और पर्यावरणीय संतुलन तक फैला हुआ है।

अन्य दार्शनिक परंपराओं से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि मध्यस्थ दर्शन की अनूठी विशेषताएं हैं। यह न तो अद्वैत वेदांत की तरह जगत को माया मानता है, न बौद्ध धर्म की तरह आत्मा को नकारता है, और न ही अस्तित्ववाद की तरह अर्थ के निर्माण को व्यक्ति की मर्जी पर छोड़ता है। इसके बजाय, यह एक संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है जो वास्तविकता की प्राकृतिक व्यवस्था को समझने और उसके अनुसार जीने पर आधारित है। शिक्षा के क्षेत्र में मध्यस्थ दर्शन का योगदान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव वर्तमान शिक्षा प्रणाली की कमियों को दूर करने में सक्षम है। जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से इसका व्यावहारिक प्रसार हो रहा है, जो इसकी जीवंतता को दर्शाता है। हालांकि इस दर्शन के सामने कुछ चुनौतियां हैं - जैसे सिद्धांत से व्यवहार में आने की जटिलता, अकादमिक स्वीकृति की आवश्यकता, और व्यापक सामाजिक कार्यान्वयन की समस्याएं - लेकिन इसकी भविष्य की संभावनाएं उत्साहजनक हैं। शैक्षिक एकीकरण, अनुसंधान विकास, वैश्विक प्रसार और नीति निर्माण के क्षेत्रों में इसकी क्षमता स्पष्ट दिखाई देती है।

अंततः, मध्यस्थ दर्शन मानवता को एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाने की संभावना प्रस्तुत करता है जहां "सर्वे भवन्तु सुखिनः" (सभी सुखी हों) और "वसुधैव कुटुंबकम्" (पूरी पृथ्वी एक परिवार है) की प्राचीन भारतीय आकांक्षाएं साकार हो सकें। यह केवल एक दार्शनिक अभ्यास नहीं है, बल्कि मानव जीवन के सभी आयामों में व्यावहारिक परिवर्तन लाने का एक सम्पूर्ण कार्यक्रम है।

इस दर्शन का अध्ययन और अनुप्रयोग न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि समाज के समग्र कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। यह एक ऐसा समय है जब मानवता को नवीन दृष्टिकोण और समाधानों की आवश्यकता है, और मध्यस्थ दर्शन इस आवश्यकता की पूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

### संदर्भ सूची

1. Nagraj, A. (2011). *Manav Abhyas Darshan*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.
2. Nagraj, A. (2011). *Manav Anubhav Darshan*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.
3. Nagraj, A. (2011). *Manav Karam Darshan*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.
4. Nagraj, A. (2011). *Manav Sanchetanavadi Manovigyan*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.

5. Nagraj, A. (2011). *Manav Vyavahar Darshan*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.
6. Nagraj, A. (2011). *Manviya Samvidhan-Sutra Vyakhya*. Jeevan Vidya Prakashan, Divyapath Sanstha.
7. Centre for Harmonious Coexistence. (n.d.). Introduction.  
<https://www.thecoexistence.org/our-philosophy/worldview-of-harmonious-coexistence/>
8. Nagraj. (2025). *Madhyasht Darshan*. *Scribd*.  
<https://www.scribd.com/document/870143653/Madhyasht-Darshan>
9. Educational Philosophy. (n.d.). *Madhyasth Darshan – Jeevan Vidya*.  
<http://madhyasth-darshan.info/program/educational-philosophy/>
10. Jeevan Vidya Workshop. (2024, July 11). Home - Jeevan Vidya Coexistence workshop-shivir. <https://jeevanvidya.info/>
11. Madhyasth Darshan. (n.d.). Concepts Summary – Madhyasth Darshan – Jeevan Vidya. <https://madhyasth-darshan.info/philosophy/explore-concepts/basics/>
12. Madhyasth Darshan. (n.d.). Topics of Study. <https://madhyasth-darshan.info/browse-texts/topics-of-study/>
13. Nagraj, A. (2015). मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद पर आधारित प्रणेता एवं लेखक ए. नागराज [Madhyasth Darshan based on co-existentialism by A. Nagraj]. *Atmiya University*.  
[https://atmiyauni.ac.in/public/file/1733135760.01\\_vikalp\\_aur\\_jv\\_adhyayan\\_bindu\\_2015\\_ocr.pdf](https://atmiyauni.ac.in/public/file/1733135760.01_vikalp_aur_jv_adhyayan_bindu_2015_ocr.pdf)
14. Nagraj, A. (2015). मध्यस्थ दर्शन - सहअस्तित्ववाद [Madhyasth Darshan - Co-existentialism]. *Atmiya University*.  
[https://atmiyauni.ac.in/public/file/1733135848.07\\_manav\\_anubhav\\_darshan\\_2015\\_ocr.pdf](https://atmiyauni.ac.in/public/file/1733135848.07_manav_anubhav_darshan_2015_ocr.pdf)
15. Nagraj, A. (2018, May 22). A Study in Coexistence (जीवन विद्या - सह-अस्तित्व में अध्ययन). *Jeevan Vidya*. [https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2018/05/blog-post\\_22.html](https://madhyasth-darshan.blogspot.com/2018/05/blog-post_22.html)
16. Philosophy Brief. (2024, May 5). Jeevan Vidya Coexistence workshop-shivir - coexistential philosophy. <https://jeevanvidya.info/more/philosophy-brief/>